अध्याय V

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1	प्रस्तावना
5.2	समस्या कथन
5.3	अध्ययन के उदद्देश्य
5.4	परिकल्पनाएँ
5.5	शोध के चर
5.6	शोध समस्या की सीमाएँ
5.7	न्यादर्श
5.8	शोध में प्रयुक्त उपकरण
5.9	शोध के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी
5.10	समस्या के मुख्य परिणाम
5.11	निष्कर्ष
5.12	शैक्षिक सुझाव
5.13	भावी शोध हेतु सुझाव

अध्याय V

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना :–

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। राष्ट्रीय तथा सामाजिक विकास में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। प्राचीन काल से ही इसी कारण शिक्षक को आदरपूर्ण स्थान दिया जाता रहा है। वर्तमान समय में पर्यावरण को दूषित करने वाली प्रवृत्ति पर अंकुश शिक्षक ही लगा सकता है। वे लोगों में पर्यावरणीय चेतना का विकास कर सकते हैं। यदि शिक्षकों में पर्यावरण से संबंधित कौशल अभिवृत्ति एंवं मूल्यों का विकास होगा तभी वे जनसामान्य में पर्यावरणीय चेतना विकसित कर सकते हैं, इसलिए पर्यावरणीय चेतना के विकास हेतु शिक्षकों को स्वयं तदसंबंधी मूल्यों में पांरगत होना चाहिए। अतः पर्यावरण यचेतना विकसित करने हेतु शिक्षक का यह दायित्व है कि वह विद्यार्थियों तथा लोगों को मानसिक रूप से तैयार करें। यदि शिक्षक पर्यावरण के प्रति जागरूक होंगे तब ही विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता आ सकती है।

इसलिए प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन तथा विद्यालयों में होने वाले पर्यावरण संबंधित कार्यक्रमों का अध्ययन है।

5.2 समस्या कथन :–

"प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता तथा विद्यालयों में होने वाले पर्यावरण से संबंधित कार्यक्रमों का अध्ययन।"

5.3 अध्ययन के उद्देश्य :–

1. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।
3. विज्ञान तथा अन्य (सामाजिक विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।
4. सामाजिक विज्ञान तथा अन्य (विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।
5. विज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा अन्य विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।
6. 0–10 वर्ष, 10–20 वर्ष, तथा 20 वर्ष से अधिक अनुभव प्राप्त अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।
7. प्राथमिक विद्यालयों में होने वाले पर्यावरण से संबंधित कार्यक्रमों का अध्ययन करना।

5.4 परिकल्पनाएँ:–

1. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. अध्यापक तथा अध्यापिकाओं की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. विज्ञान तथा अन्य (सामाजिक विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4. सामाजिक विज्ञान तथा अन्य (विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. विज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा अन्य विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

6. 0–10 वर्ष, 10–20 वर्ष तथा 20 वर्ष से अधिक अनुभव प्राप्त अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.5 शोध के चर :–

शोध समस्या में निम्न चर है।

स्वतंत्र चर –

लिंग	–	अध्यापक/अध्यापिका
क्षेत्र	–	ग्रामीण/शहरी
विषयिक पृष्ठभूमि	–	विज्ञान/सामाजिक विज्ञान/अन्य
अनुभव	–	0–10 वर्ष/10–20 वर्ष /20 से अधिक
आश्रित चर	–	पर्यावरण जागरूकता

5.6 शोध समस्या की सीमाएँ :–

1. प्रस्तुत अध्ययन महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के प्राथमिक विद्यालयों तक सीमीत है।

2. यह अध्ययन ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र तक सीमीत है।

3. यह अध्ययन शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के केवल 100 अध्यापकों तक सीमीत है।

5.7 न्यादर्श –

प्रस्तुत अध्ययन में महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के 10 ग्रामीण व 10 शहरी, शासकीय विद्यालयों को शामिल किया है। न्यादर्श को यादृच्छिक विधि से चयनित किया है।

इस शोधकार्य के अन्तर्गत 20 विद्यालयों से कुल 100 अध्यापकों का समावेश किया है। जिसमें 50 अध्यापक ग्रामीण क्षेत्र से तथा 50 अध्यापक शहरी क्षेत्र से है।

5.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

1. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता जानने के लिए डॉ. सीमा धवन द्वारा निर्मित प्रमाणिकृत, पर्यावरण जागरूकता परीक्षण (Environment awareness test of Teacher) का उपयोग किया गया।

2. विद्यालयों में होने वाले पर्यावरण संबंधित कार्यक्रमों का अध्ययन करने के लिए स्वनिर्मित, प्रधानाध्यापक साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया।

5.9 प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु आवृत्ति, प्रतिशत, मध्यमान, प्रमाण विचलन, 'टी' परीक्षण एवं 'एफ' परीक्षण (Anova) का उपयोग किया गया।

"प्रधानाध्यापक साक्षात्कार अनुसूची के विश्लेषण हेतु शोधकर्ता द्वारा वर्णित प्रत्येक प्रश्नों के अलग-अलग आये उत्तर की आवृत्ति का योग निकाला गया। इन योगों का प्रतिशत निकाला गया। प्रतिशत निकालने के पश्चात् विभिन्न श्रेणियों में आये आंकड़ों को दिखाने के लिए तालिका का निर्माण किया गया।

5.10 अध्ययन के मुख्य परिणाम :-

1. प्राथमिक विद्यालयों के 60% अध्यापक पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक है। तथा 40% अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता औसतन (Average) है।
2. ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर है।
3. अध्यापक तथा अध्यापिकाओं की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. विज्ञान तथा अन्य (सामाजिक विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर है।
5. सामाजिक विज्ञान तथा अन्य (विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व अन्य विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर है।

7. 0–10 वर्ष, 10–20 वर्ष, 20 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव प्राप्त अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8. शहरी क्षेत्र के विद्यालयों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय पर्यावरण संबंधित कार्यक्रमों में अधिक सहभागी होते हैं। परन्तु पर्यावरण संबंधित शिक्षक–प्रशिक्षण तथा कार्यशाला का आयोजन ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र एक भी विद्यालय में नहीं किया जाता है।

5.11 निष्कर्ष :–

प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता परीक्षण लेने के बाद यह निष्कर्ष निकाला गया कि 60% अध्यापक पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक है। 40% अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता औसतन है।

अध्यापकों को ग्रामीण एवं शहरी दो भागों में विभाजित किये जाने पर, पर्यावरण जागरूकता परीक्षण द्वारा ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों में सार्थक अंतर पाया गया। ग्रामीण अध्यापकों की अपेक्षा शहरी अध्यापकों मे पर्यावरण जागरूकता ज्यादा पायी गयी। अध्यापक तथा अध्यापिकाओं की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

विषयिक पृष्ठिभूमि के आधार पर विज्ञान सामाजिक विज्ञान व अन्य विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर पाया गया। सामाजिक विज्ञान व अन्य विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की अपेक्षा विज्ञान पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता ज्यादा पायी गयी। अनुभव के आधार पर 0–10वर्ष, 10–20 वर्ष, व 20 वर्ष

से अधिक शैक्षिक अनुभव प्राप्त अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

प्राथमिक विद्यालयों में होने वाले पर्यावरण संबंधित कार्यक्रमों की जानकारी प्रधानाध्यापक साक्षात्कार से प्राप्त हुई इसमें यह पाया गया की शहरी क्षेत्र के विद्यालयों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय कार्यक्रमों में अधिक सहभागी होते परन्तु पर्यावरण संबंधित कार्यशाला व शिक्षक–प्रशिक्षण का आयोजन ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों मे नहीं किया जाता है।

अतंतः हम इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाले सकते है कि अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता और बढ़ाने की आवश्यकता है एवं शहरी विद्यालयों को पर्यावरण से संबंधित कार्यक्रमों अधिक सहभागी होना चाहिए।

5.12 शैक्षिक सुझाव :–

1. शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में अनिवार्य विषयों के साथ–साथ पर्यावरण शिक्षा को भी स्थान दिया जाए, जिससे अध्यापकों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित हो जाएगी।
2. संस्थान में शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा परिचर्चाओं का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे अध्यापकों की पर्यावरण के प्रति सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न हो सके।
3. अध्यापकों में सदैव पर्यावरण के क्षेत्र में हुए शोधों से अवगत होना चाहिए।
4. पर्यावरण शिक्षा एक व्यावहारिक विषय है जो संस्थान के प्रांगण व उसके बाहर अनौपचारिक रूप में इस कारण पढ़ाया जाये, जिससे

कि शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हो सके।

5.13 भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन।
2. प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों में होनेवाली पर्यावरण संबंधित गतिविधियों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. आदिवासी क्षेत्र के अध्यापक तथा विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन।
4. प्राथमिक विद्यालयों में पर्यावरण जागरूकता एवं पर्यावरण संवर्धन का अध्ययन।
5. औद्योगिक एवं सामान्य क्षेत्र के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन।
6. छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति रूचि का तुलनात्मक अध्ययन।
7. आदिवासी तथा गैर आदिवासी विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
8. विद्यार्थियों में पर्यावरण संवर्धन के लिए भ्रमण विधि महत्वपूर्ण है। इसके बारे में अध्ययन किया जा सकता है।
9. पर्यावरण शिक्षा में भ्रमण विधि एवं व्याख्यान विधि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।